International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

भारतीय संस्कृति में संचित मानव मूल्य एवं चरित्र निर्माण में इन मानव मूल्यों की भूमिका

प्रतिमा तिवारी
अतिथि प्रवक्ता (शिक्षाशास्त्र विभाग),
सी0एम0पी0डिग्री कालेज, इलाहाबाद
(इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद)

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति मूल्य प्रधान व्यवहार की पोषक है। भारतीय संस्कृति में मानव मूल्यों को विशेष महत्व प्रदान किया गया है। मानव मूल्यों को चारित्रिक विशेषताओं के रूप में संदर्भित किया गया है। मानव मूल्य मानव को पशुता से भिन्न रूप में प्रदर्शित करते हैं, जिसके अन्तर्गत सत्य, सदाचार, अहिंसा, परोपकार, दया, क्षमा और कर्तव्यनिष्ठा आदि मानवीय मूल्य अत्यन्त ही विशिष्ट एवं मानवता के पोषक तत्व हैं। मानव मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं चारित्रिक गुणों के द्योतक हैं। मानव मूल्य की अवधारणा वेद, पुराण, जैन धर्म, बौद्ध धर्म सदैव प्रस्तुत दिखाई पड़ते हैं।

प्राचीन काल में गुरूकुल की शिक्षा में मानव मूल्यों की शिक्षा समाहित थी। वैदिक काल में शिक्षा, मनुष्य को अच्छा व्यक्ति बनाने तथा उसके सर्वांगीण विकास के लिए थी। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पर आधारित शिक्षा में उस काल के तथ्यों, घटनाओं, आँकड़ों को केवल कंठस्थ कर लेना विद्वता का मापदण्ड नहीं था। मनुष्य के उच्च विचार, नैतिकता, सचरित्र एवं पवित्र आचरण का महत्व सर्वोपरि था। चरित्रवान तथा ज्ञानवान व्यक्ति ही सामाजिक सम्मान का पात्र था। बाल्मीकि, वशिष्ठ, संदीपन आदि ऋषि–मुनि इसके उदाहरण हैं। श्रीमद्भगवत गीता के अनुसार ''ज्ञान का अर्थ पंडिताई या पुस्तकीय ज्ञान नहीं है। ज्ञान का अर्थ सद्गुण अथवा ऐसी शिक्षा से है, जो मनुष्य के चरित्र में सद्गुणों को संचित कर सके। यही सच्ची शिक्षा है।''

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

मर्यादा पुरूषोत्तम राम का चरित्र बाल्मीकि रामायण में आदर्श चरित्र के रूप में चित्रित है। पौराणिक कथाओं पंचतंत्र कथाएं, विक्रमादित्य की बेताल पच्चीसी की कथाएं बौद्धकालीन जातक कथाएं मानव मूल्यों के तत्वों एवं चरित्र के निर्माण में मानव मूल्यों को एक प्रमुख घटक के रूप में प्रस्तुत करते हुए सद्चरित्र निर्माण हेतु अत्यन्त आवश्यक तल मापती हैं। मानव को सदाचारी, विवेकशील, परोपकारी, दयालु एवं लोभरहित चरित्र निर्माण हेतु सहयोग भी प्रदान करती हैं।

तैतरीय उपनिषद में विद्यार्थी को सुझाव दिया गया है कि अध्ययन तथा संभाषण में सदाचारी बनें अध्ययन तथा वाणी में सत्याचरण करें। अध्ययन के साथ तप, दम, शम, अतिथ्य विनम्रता, आश्रितों की रक्षा तथा संतति पालन का ध्यान रखना, सत्य बोलना, कर्तव्य पालन, व्यक्तिगत कल्याण तथा समृद्धि की अपेक्षा न करना, अध्ययन में प्रमाद न करना, दूसरों के प्रति सद्भाव रखना, गुरू में उपस्थित अनुकरणीय बातों की उपासना एवं विशिष्टता प्रदान करना ही छात्र का धर्म है। उपरोक्त प्रस्तुत मानव मूल्य व्यक्ति के चरित्र को लोकप्रिय एवं आदर्श बनाने के साथ ही आध्यात्मिक उन्नति में भी सहयोग प्रदान करते हैं।

मानव मूल्यों के संदर्भ में जैन शिक्षा दर्शन एक अति समृद्ध दर्शन है, जिसमें चार कषाय पर नियंत्रण करने का उपदेश छात्र को दिया जाता है– क्रोध, मोह, लोभ एवं मद का नियंत्रण एवं अंकुश का उपदेश दिया जाता है। इसके लिए छात्रों को योग एवं रत्नत्रयी का सुझाव प्रदान किया जाता है। रत्नत्रयी के मार्ग द्वारा कैवल्य की प्राप्ति संभव बतायी गयी है। रत्नत्रयी के लिए पाँच महाव्रतों के पालन पर भी जोर दिया गया है।

बौद्ध धर्म में छात्रों को बौद्ध विहारों में शिक्षा प्रदान करने से पूर्व दस सिक्खा पदानि का संकल्प कराया जाता है–

1. जीव हिंसा न करना।
2. किसी की वस्तु न लेना।
3. अशुद्ध आचरण से दूर रहना।
4. असत्य भाषण न करना।

5. मादक पदार्थों का सेवन न करना।
6. कुसमय भोजन न करना।
7. किसी की निंदा न करना।
8. नृत्य गायन से दूर रहना।
9. सुगन्धित व श्रृंगारिक वस्तुओं का उपयोग न करना।
10. सोना–चाँदी बहुमूल्य धातुओं का दान न लेना।

सद्चरित्र के निर्माण एवं दससिक्खा पदानि के संकल्पों को पूरा करने के लिए त्रिरत्न द्वारा शरीर की शुद्धि को आवश्यक बताया। शरीर शुद्धि के उपरांत निर्वाण प्राप्ति के लिए महात्मा बुद्ध ने आर्य आष्टांगिक मार्ग के अनुसरण का उपदेश दियाः–

1. सम्यक् दृष्टि
2. सम्यक् संकल्प
3. सम्यक् वचन
4. सम्यक् कर्म
5. सम्यक् जीव
6. सम्यक् व्यायाम
7. सम्यक् स्मृति
8. सम्यक् समाधि

भारतीय संस्कृति के अभिन्न तत्व के रूप में मानव मूल्य की उपयोगिता सद्चरित्र निर्माण में एवं सद्चरित्र को आदर्श के रूप में प्रतिस्थापित करने में अत्यन्त ही उपयोगी है। चरित्र निर्माण जन्मकाल से प्रारम्भ होकर किशोरावस्था तक तीव्र गति से संचालित होता है। किशोरावस्था तक छात्र के मानस पटल पर सत्, असत् के विचारों में परिपक्वता देखने को मिलती है। प्रौढ़ावस्था के अनुभवों के आधार पर चरित्र में परिवर्तन सूक्ष्म रूप में संभव है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त मानव मूल्य मानव के चारित्रिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में सदैव अमूल्य योगदान करते हैं। भारतीय संस्कृति की वसुधैव कुटुम्बकम् की विचारधारा मूल्यों की

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

चरित्र निर्माण में भूमिका को स्पष्ट करती दिखाई प्रतीत होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डागर, डॉ0 बी0एस0(1992)–शिक्षा तथा मानव मूल्य, चंडीगढ़, हरियाणा साहित्य अकादमी।
2. जोयिस, न्यायमूर्ति एम0राम0 (1997) मानव अधिकार तथा भारतीय मूल्य, नई दिल्ली, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद।
3. राय, प्रकाश चन्द्र–भारत के अग्रणी समाज सुधारक, नई दिल्ली, सेंचुरी पब्लिकेशन्स
4. राष्ट्रीय प्रतीक, सेन्ट्रल फार कल्चरल रिसोर्स एण्ड ट्रेनिंग, 15ए द्वारका, सेक्टर–7, नई दिल्ली।